Title-code: UPHIN-48963

E-mail: jksingh.hardoi@gmail.com

सत्य का असर

समाचार पत्र

06,10,2023 jksingh.hardoi@gmail.com मोबाइल नंबर 9956834016

Top News **पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल**

दलहनी फसलों का बुवाई पूर्व उपचार आवश्यक: डॉ एस के विश्वास

पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में आज पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ एस के विश्वास ने रबी फसलों में उगाई जाने वाली दलहनी फसलों (चना, मसूर, मटर) में रोगों की रोकथाम हेतु किसान भाइयों के लिए एडवाइजरी जारी की। उन्होंने बताया की दलहनी फसलों में फफूंदी एवं जीवाणु जनित रोगों जैसे उकठा, जड़ सड़न,झुलसा, रतुआ, चूर्णित आशिता इत्यादि रोगों का प्रकोप होता है। डॉक्टर विश्वास ने बताया कि किसान भाई बुवाई से पूर्व मृदा का शोधन अवश्य करें।इसके लिए 1 किलोग्राम ट्राइकोडर्मा को 25 किलोग्राम सड़ी हुई गोबर की खाद में मिलाकर बुवाई के 15 दिन पूर्व शाम के समय खेत में मिलाकर हल्की सिंचाई कर दें। यह मात्रा 1 हेक्टेयर के लिए पर्याप्त होगी। उन्होंने उकठा रोग के प्रबंधन के लिए बताया कि गर्मी में गहरी जुताई अवश्य करे तथा बुवाई के पूर्व 5 ग्राम ट्राइकोडरमा प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित कर दें। दलहनी फसलों में झुलसा रोग के प्रबंधन के बारे में बताया कि 2 ग्राम कार्बेडाजिम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बुवाई करने पर बीज शोधित कर बुवाई करें। जिससे झुलसा रोग नियंत्रित रहता है। मसूर की फसल में रतुआ रोग की नियंत्रण के खड़ी फसल में 2 ग्राम मैनकोज़ेब 700 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने से लाभ होता है डॉक्टर विश्वास ने यह भी बताया कि मटर की फसल में चूर्णित आसिता रोग के नियंत्रण हेतु कैराथीन 3 ग्राम 700 लीटर पानी में घोलकर खड़ी फसल में प्रयोग करने से लाभ होगा। इसके अतिरिक्त फसल चक्र किसान भाई अवश्य अपनाएं जिसमें गन्ना,सरसों,अलसी या गेहूं की खेती को किया जा सकता है। क्योंकि एक ही प्रकार की फसलें बार-बार एक ही खेत में करने से रोग और कीड़ों की संभावना ज्यादा रहती है। उन्होंने बताया कि इस प्रकार किसान भाई अपनी दलहनी फसलों को रोग मुक्त कर सकते हैं तथा दलहनी फसलों से आशातीत उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।

राष्ट्रीय
सहारा
कानपुर • शुक्रवार • 6 अक्टूबर • 2023

ाहनी फसलों का बुआई पूर्व उपचार जरूरी

। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय ह पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष विश्वास ने रवी फसलों में उगाई जाने वाली दलहनी फसलों ूर, मटर) में रोगों की रोकथाम के लिये किसानों को वुआई उपचार करने की सलाह दी है।

ने वताया कि ऐसा करके फसल को कई वीमारियों से वचाया । है।किसानों के लिए एडवाइजरी जारी करते हुए उन्होंने दलहनी फसलों में फफूंदी और जीवाणु जनित रोगों जैसे ड़ सड़न, झुलसा, रतुआ, चूर्णित आशिता इत्यादि का प्रकोप ॉक्टर विश्वास ने वताया कि किसान वुवाई से पूर्व मृदा का वश्य करें। इसके लिए 1 किलोग्राम ट्राइकोडर्मा को 25 सड़ी हुई गोवर की खाद में मिलाकर वुवाई के 15 दिन पूर्व ामय खेत में मिलाकर हल्की सिंचाई कर दें। यह मात्रा 1 ह लिए पर्याप्त होगी। दलहनी फसलों में झुलसा रोग के वारे में वताया कि 2 ग्राम कार्वेडाजिम प्रति किलोग्राम वीज वुवाई करने पर वीज शोधित कर वुवाई करें। जिससे झुलसा ात रहता है। मसूर की फसल में रतुआ रोग की नियंत्रण के ल में 2 ग्राम मैनकोजेव 700 लीटर पानी में घोलकर करने से लाभ होता है। डॉक्टर विश्वास ने यह भी वताया कि फसल में चूर्णित आसिता रोग के नियंत्रण के लिये कैराथीन ०० लीटर पानी में घोलकर खड़ी फसल में प्रयोग करने से । इसके अतिरिक्त फसल चक्र किसान भाई अवश्य अपनाएं ना,सरसों,अलसी या गेहूं की खेती को किया जा सकता है। हनी फसलों से आशातीत उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं।

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष : 15 अंक : 97 कानपुर, शुक्रवार 06 अक्टूबर 2023 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य : 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

तहरीर के आधार पर कार्रवाई की जाएगी।

दलहनी फसलों का बुवाई पूर्व उपचार आवश्यक

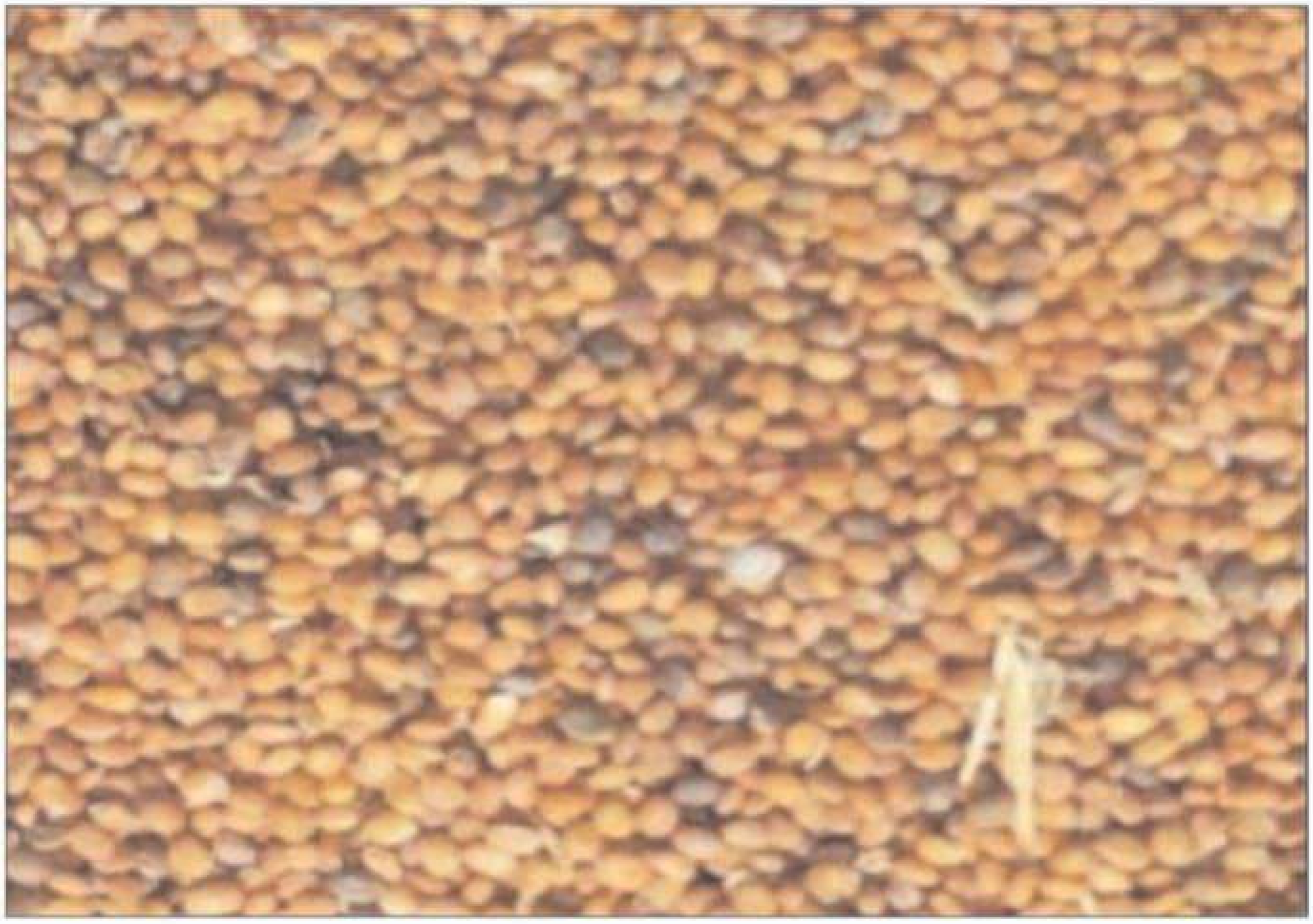

कानपुर । सीएसए के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में गुरुवार को पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ एस के विश्वास ने रबी फसलों में उगाई जाने वाली दलहनी फसलों (चना, मसूर, मटर) में रोगों की रोकथाम हेतु किसान भाइयों के लिए एडवाइजरी जारी की। उन्होंने बताया की दलहनी फसलों में फफूंदी एवं जीवाणु जनित रोगों जैसे उकठा, जड़ सड़न,झुलसा, रतुआ, चूर्णित आशिता इत्यादि रोगों का प्रकोप होता है। डॉक्टर विश्वास ने बताया कि किसान भाई बुवाई से पूर्व मृदा का शोधन अवश्य करें।इसके लिए 1 किलोग्राम ट्राइकोडर्मा को 25 किलोग्राम सड़ी हुई गोबर की खाद में मिलाकर बुवाई के 15 दिन पूर्व शाम के समय खेत में मिलाकर हल्की सिंचाई कर दें। यह मात्रा 1 हेक्टेयर के लिए पर्याप्त होगी। उन्होंने उकठा रोग के प्रबंधन के लिए बताया कि गर्मी में गहरी जुताई अवश्य करे तथा बुवाई के पूर्व 5 ग्राम ट्राइकोडरमा प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित कर दें। दलहनी फसलों में झुलसा रोग के प्रबंधन के बारे में बताया कि 2 ग्राम कार्बेंडाजिम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बुवाई करने पर बीज शोधित कर बुवाई करें। जिससे झुलसा रोग नियंत्रित रहता है। मसूर की फसल में रतुआ रोग की नियंत्रण के खड़ी फसल में 2 ग्राम मैनकोज़ेब 700 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने से लाभ होता है डॉक्टर विश्वास ने यह भी बताया कि मटर की फसल में चूर्णित आसिता रोग के नियंत्रण हेतु कैराथीन 3 ग्राम 700 लीटर पानी में घोलकर खड़ी फसल में प्रयोग करने से लाभ होगा। इसके अतिरिक्त फसल चक्र किसान भाई अवश्य अपनाएं जिसमें गन्ना सरसों अलसी या गेहूं की खेती को किया जा सकता है। क्योंकि एक ही प्रकार की फसलें बार-बार एक ही खेत में करने से रोग और कीड़ों की संभावना ज्यादा रहती है। उन्होंने बताया कि इस प्रकार किसान भाई अपनी दलहनी फसलों को रोग मुक्त कर सकते हैं तथा दलहनी फसलों से आशातीत उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।

दलहनी फसलों का बुवाई पूर्व उपचार जरूरी : डॉ. विश्वास

दलहनी फसलों में फफूंदी एवं जीवाणु जनित रोगों का प्रकोप होता है

खेत में लगी मटर की फसल।

(आज समाचार सेवा)

कानपुर, 5 अक्टूबर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ. आनंद कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में गुरुवार को पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ. एसके विश्वास ने रबी फसलों में उगाई जाने वाली दलहनी फसलों (चना, मसूर एवं मटर) में रोगों की रोकथाम हेतु किसान भाइयों के लिए एडवाइजरी जारी की। उन्होंने बताया कि दलहनी फसलों में फफूंदी एवं जीवाणु जनित रोगों जैसे उकठा, जड़ सड़न, झुलसा, रतुआ, चूर्णित आशिता इत्यादि रोगों का प्रकोप होता है। डॉ. विश्वास ने बताया कि किसान भाई बुवाई से पूर्व मृदा का शोधन अवश्य करें। इसके लिए एक किलो ट्राइकोडर्मा को 25 किलो सड़ी हुई गोबर की खाद में मिलाकर बुवाई के 15 दिन पूर्व शाम के समय खेत में मिलाकर हल्की सिंचाई कर दें। यह मात्रा एक हेक्टेयर के लिए पर्याप्त होगी। उन्होंने उकठा रोग के प्रबंधन के लिए बताया कि गर्मी में गहरी जुताई अवश्य करें तथा बुवाई से पूर्व पांच ग्राम ट्राइकोडरमा प्रति किलो बीज की दर से उपचारित कर दें। दलहनी फसलों में झुलसा रोग के प्रबंधन के बारे में बताया कि दो ग्राम कार्बेंडाजिम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बुवाई करने पर बीज शोधित कर बुवाई करें। इससे झुलसा रोग नियंत्रित रहता है। मसूर की फसल में रतुआ रोग पर नियंत्रण के लिये खड़ी फसल में दो ग्राम मैनकोज़ेब 700 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने से लाभ होता है। डॉ. विश्वास ने यह भी बताया कि मटर की फसल में चूर्णित आसिता रोग के नियंत्रण हेतु कैराथीन 3 ग्राम 700 लीटर पानी में घोलकर खड़ी फसल में प्रयोग करने से लाभ होगा। इसके अतिरिक्त फसल चक्र किसान भाई अवश्य अपनाएं जिसमें गन्ना, सरसों, अलसी या गेहूं की खेती को किया जा सकता है, क्योंकि एक ही प्रकार की फसलें बार-बार एक ही खेत में करने से रोग और कीड़ों की संभावना अधिक रहती है। उन्होंने बताया कि इस प्रकार किसान भाई अपनी दलहनी फसलों को रोग मुक्त कर सकते हैं तथा दलहनी फसलों से आशातीत उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।

दलहनी फसलों का बुवाई पूर्व उपचार आवश्यक- डॉ एस के विश्वास

दैनिक कानपुर उजाला

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ एस के विश्वास ने रबी फसलों में उगाई जाने वाली दलहनी फसलों चना, मसूर, मटर में रोगों की रोकथाम हेतु किसान भाइयों के लिए एडवाइजरी जारी की। उन्होंने बताया की दलहनी फसलों में फफूंदी एवं जीवाणु जनित रोगों जैसे उकठा, जड़ सड़न, झुलसा, रतुआ, चूर्णित आशिता इत्यादि रोगों का प्रकोप होता है। डॉक्टर विश्वास ने बताया कि किसान भाई बुवाई से पूर्व मृदा का शोधन अवश्य करें। इसके लिए 1 किलोग्राम ट्राइकोडर्मा को 25 किलोग्राम सड़ी हुई गोबर की खाद में मिलाकर बुवाई के 15 दिन पूर्व शाम के समय खेत में मिलाकर हल्की सिंचाई कर दें। यह मात्रा 1 हेक्टेयर के लिए पर्याप्त होगी। उन्होंने उकठा रोग के प्रबंधन के लिए बताया कि गर्मी में गहरी जुताई अवश्य करे तथा बुवाई के पूर्व 5 ग्राम ट्राइकोडरमा प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित कर दें। दलहनी फसलों में झुलसा रोग के प्रबंधन के बारे में बताया कि 2 ग्राम कार्बेंडाजिम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बुवाई करने पर बीज शोधित कर बुवाई करें। जिससे झुलसा रोग नियंत्रित रहता है। मसूर की फसल में रतुआ रोग की नियंत्रण के खड़ी फसल में 2 ग्राम मैनकोज़ेब 700 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने से लाभ होता है डॉक्टर विश्वास ने यह भी बताया कि मटर की फसल में चूर्णित आसिता रोग के नियंत्रण हेतु कैराथीन 3 ग्राम 700 लीटर पानी में घोलकर खड़ी फसल में प्रयोग करने से लाभ होगा।

दलहनी फसलों का बुवाई पूर्व उपचार आवश्यकः डॉ एस के विश्वास

आज का कानपुर

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में आज पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ एस के विश्वास ने रबी फसलों में उगाई जाने वाली दलहनी फसलों (चना, मसूर, मटर) में रोगों की रोकथाम हेतु किसान भाइयों के लिए एडवाइजरी जारी की। उन्होंने बताया की दलहनी फसलों में फफूंदी एवं जीवाणु जनित रोगों जैसे उकठा, जड़ सड़न,झुलसा, रतुआ, चूर्णित आशिता इत्यादि रोगों का प्रकोप होता है। डॉक्टर विश्वास ने बताया कि किसान भाई बुवाई से पूर्व मृदा का शोधन अवश्य करें इसके लिए 1 किलोग्राम ट्राइकोडर्मा को 25 किलोग्राम सड़ी हुई गोबर की खाद में मिलाकर बुवाई के 15 दिन पूर्व शाम के समय खेत में मिलाकर हल्की सिंचाई कर दें। यह मात्रा 1 हेक्टेयर के लिए पर्याप्त होगी। उन्होंने उकठा रोग के प्रबंधन के लिए बताया कि गर्मी में गहरी जुताई अवश्य करे तथा बुवाई के पूर्व 5 ग्राम ट्राइकोडरमा प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित कर दें। दलहनी फसलों में झुलसा रोग के प्रबंधन के बारे में बताया कि 2 ग्राम कार्बेंडाजिम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बुवाई करने पर बीज शोधित कर बुवाई करें। जिससे झुलसा रोग नियंत्रित रहता है। मसूर की फसल में रतुआ रोग की नियंत्रण के खड़ी फसल में 2 ग्राम मैनकोज़ेब 700 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने से लाभ होता है डॉक्टर विश्वास ने यह भी बताया कि मटर की फसल में चूर्णित आसिता रोग के नियंत्रण हेतु कैराथीन 3 ग्राम 700 लीटर पानी में घोलकर खड़ी फसल में प्रयोग करने से लाभ होगा। इसके अतिरिक्त फसल चक्र किसान भाई अवश्य अपनाएं जिसमें गन्ना,सरसों,अलसी या गेहूं की खेती को किया जा सकता है। क्योंकि एक ही प्रकार की फसलें बार-बार एक ही खेत में करने से रोग और कीड़ों की संभावना ज्यादा रहती है। उन्होंने बताया कि इस प्रकार किसान भाई अपनी दलहनी फसलों को रोग मुक्त कर सकते हैं तथा दलहनी फसलों से आशातीत उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।

सीएचसी इ

गोंडा। महिला कल्याण विभाग द्वारा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पर कन्या जन्मोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में सीएचसी अधीक्षक डा. सुनील पासवान ने कहा कि लैंगिक असमानता दूर करने के लिए कन्या जन्मोत्सव का आयोजन किया जाता है।